अथवा, जे० एस० मिल की 'स्वतंत्रता का सिद्धांत' (J.S. Mill's Theory of Liberty) की समीक्षा करें।

उत्तर—J.S. Mill की पुस्तक 'On Liberty' एक महत्वपूर्ण राजनीतिक ग्रंथ है। मिल स्वतंत्रता संबंधित अपने विचारों के लिए अधिक प्रसिद्ध हैं और उसके स्वतंत्रता विषयक विचार उसी पुस्तक में व्यक्त हुए हैं। जे० एस० मिल व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास का प्रबल समर्थक है। वह चाहता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व के सारे पहलुओं का विकास हो, जिससे उसकी कर्मव्यता, निपुणता की श्रेष्ठता को पा सके और उसकी वैधता अधिक ऊँचाई तक हो सके। जे० एस० मिल का विश्वास है कि जब तक व्यक्ति की अंतर्निहित प्रतिभा को पूर्ण रूप से निखरने के सु-अवसर नहीं दिया जाएगा, सार्वजनिक प्रगति का होना असंभव नहीं है। अतः जे० एस० मिल ने व्यक्तियों के विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता एवं उनके कार्य की स्वतंत्रता पर पूर्ण बल दिया है।

विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता—जे० एस० मिल के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपना विचार प्रकट करने के लिए पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए, व्यक्तिगत विचार एवं भाषण के पक्ष में जे० एस० मिल ने निम्न तर्क दिया है :

(i) मिल का विश्वास है कि सर्वसाधारण द्वारा अपनाया गया विचार ही सत्य नहीं होता। किसी बात की सत्यता जनमत एवं परम्परागत मान्यता पर ही निर्भर नहीं करती। अतएव परम्पराओं एवं प्रथाओं के आधार पर प्रचलित अंधविश्वासों को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति को विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता हो।

(ii) जे० एस० मिल के अनुसार किसी व्यक्ति का विचार या तो सत्य होता है या मिथ्या अथवा कुछ सत्य और कुछ मिथ्या। यदि प्रशासक व्यक्ति के सत्य विचार का दमन करता है तो वह सत्य की खोज में बाधाएँ उपस्थित कर अन्याय करता है। यदि किसी व्यक्ति का विचार असत्य एवं हानिकारक हो तो भी प्रशासन को उसका दमन करने का कोई अधिकार नहीं होना चाहिए क्योंकि कोई जनसमुदाय किसी के विचार की असत्यता को समझ सकता है, उसकी निंदा कर सकता है एवं उसे अस्वीकार भी कर सकता है। यदि कोई विचार आंशिक रूप मे भी सत्य है तो भी उसका दमन नहीं होना चाहिए क्योंकि उसमें सत्य का कुछ अंश तो रहता ही है।

(iii) जे० एस० मिल विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता का समर्थन इसलिए करता है क्योंकि उसका विश्वास है कि वाद-विवाद एवं विचार, संघर्षों के द्वारा ही सत्य की खोज की जा सकती है।

(iv) उपयोगितावाद के सिद्धांत पर भी मिल ने भाषण एवं विचार की स्वतंत्रता का समर्थन किया है। उसका विश्वास है कि इस स्वतंत्रता के उपयोग से व्यक्ति आत्मिक सुख का अनुभव करता है। उसे यह भी अनुभूति होती है कि समाज में उसका महत्वपूर्ण स्थान एवं आदर है।

(v) जे० एस० मिल का यह विश्वास है कि विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता नैतिक रूप से पूर्णतः विकसित व्यक्तित्व का एक स्वाभाविक रूप है। अतएव एक उदारवादी राज्य के लिए यह आवश्यक है कि वह उसको मान्यता दे। अतः **प्रो० सेबाईन** ने लिखा है कि, "विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता के पक्ष में जे० एस० मिल का वास्तविक तर्क यह है कि इसमें उच्च स्तर के नैतिक चरित्र का जन्म एवं विकास होता है।"

(vi) जे० एस० मिल के अनुसार किसी ऐसे मत का भी दमन नहीं होना चाहिए जिसके पक्ष में केवल एक ही व्यक्ति है और विश्व के सारे व्यक्ति उसके विपक्ष में है यदि वह मत असत्य है तो प्रचलित मत की सत्यता और उस नए मत की असत्यता के संघर्ष के परिणामस्वरूप प्रचलित मत की सत्यता निखर उठेगी, उसका प्रभाव बढ़ जाएगा और उसकी पुष्टि भी हो जाएगी।

अंत में जे० एस० मिल का विश्वास है कि विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता ही मानव जाति की प्रगति की आधारशिला है। उसका मत है कि विचारों के पारस्परिक संघर्ष के द्वारा ही बुद्धि अर्जित की जा सकती है जिसके द्वारा मानव एवं समाज का कायाकल्प संभव है।

कार्य की स्वतंत्रता—जे० एस० मिल के अनुसार विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता का महत्व तभी सार्थक हो सकता है जब व्यक्ति को कार्य करने की भी स्वतंत्रता हो। अतः उसने विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता के बाद कार्य की स्वतंत्रता पर अपना विचार प्रकट किया है। व्यक्ति का विकास तभी संभव है जब उसे कार्य की स्वतंत्रता हो, क्योंकि यदि कोई व्यक्ति स्वतंत्रतापूर्वक सोचता है, लेकिन दूसरों की आज्ञा के अनुसार अपना कार्य करता है तो उसके स्वतंत्रतापूर्वक सोचने का कोई मूल्य नहीं है। वह तो कार्य की स्वतंत्रता के अभाव में दूसरों का दास ही हो जाता है। अतः जे० एस० मिल के अनुसार अपने ऊपर व्यक्ति की सम्प्रभुता ही स्वतंत्रता है। अपने आप का अपने शरीर एवं मस्तिष्क का व्यक्ति स्वयं ही स्वामी होता है। सभी प्रतिबंध एक बुराई है। सभ्य समाज के किसी भी सदस्य के विरुद्ध शक्ति का प्रयोग केवल इसी उद्देश्य के लिए हो सकता है कि उसे दूसरों को हानि पहुँचाने से रोका जाए।

दूसरा, राज्य व्यक्ति के जीवन में आत्मरक्षा के लिए हस्तक्षेप कर सकता है। स्वतंत्रता किसी कार्य को करने से संबंधित है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति नदी में कूद कर आत्महत्या कर ले।

जे० एस० मिल ने मनुष्य के कार्यों को दो भागों में बाँटा है। प्रथम, वे कार्य जिनका संबंध सिर्फ कर्त्ता से होता है ('Self regarding action') एवं द्वितीय, वे कार्य जिनका संबंध दूसरे व्यक्ति से भी रहता है (other regarding action)। जे० एस० मिल का विचार है कि जब तक कोई व्यक्ति ऐसा कार्य करता है जिसका प्रभाव केवल उसी पर पड़ता है, दूसरों पर नहीं, तब तक राज्य को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। दूसरे शब्दों में जिन बातों से दूसरे का संबंध नहीं है, उन्हें अपने ढंग से करने की व्यक्तिक स्वतंत्रता होनी चाहिए।

जे० एस० मिल का विचार है कि किसी व्यक्ति की शक्ति के विकास में किसी तरह की रूकावट नहीं होनी चाहिए। उसका विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति का निर्माण विभिन्न प्रकार से हुआ है। उनकी आंतरिक शक्तियाँ भी विभिन्न हैं अत एव अपनी-अपनी शक्तियों के विकास के लिए व्यक्तियों को विभिन्न परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। अत: जे० एस० मिल व्यक्ति की आकांक्षाओं एवं प्रवृत्तियों को पूरी स्वतंत्रता देना चाहता है। उसका विश्वास है कि उसी व्यक्ति का चरित्र अपना हो सकता है जिसकी प्रवृत्तियाँ एवं अभिलाषाएँ उसके अपने स्वभाव को अभिव्यक्त करती है।

अंत में मिल यह भी विश्वास रखता है कि किसी राष्ट्र की प्रगति तभी अवरुद्ध होती है एवं उसका पतन तभी प्रारंभ होता है जब उसके व्यक्तियों के व्यक्तित्व का ह्रास होता है। अतएव व्यक्तिगत सामाजिक एवं राष्ट्रीय सुख तथा उत्थान के लिए यह परम आवश्यक है कि कार्य की स्वतंत्रता के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास किया जाए।

आलोचना—स्वतंत्रता संबंधी जे० एस० मिल के विचार का महत्त्व होते हुए भी यह बहुत अंशों में अपूर्ण है। अत: उसके विचारों की काफी आलोचना की गई है :

(i) यह कहा जाता है कि विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता पर मिल के तर्क जितने भी सशक्त एवं उपयोगी क्यों न हो, इनसे हमारा संदेह दूर नहीं हो पाता। जैसे—व्यक्तियों के उस छोटे समूह के प्रति हमलोगों का क्या रूख होगा, जो किसी शत्रु देश के हित में अपनी बंधनहीन स्वतंत्रता का उपयोग करता है। वाद-विवाद आवश्यकता से अधिक महत्व देना क्या खतरनाक नहीं है।

इस प्रकार मिल के विचारों में काफी कमजोरियाँ है। वह सभी सनकी एवं बुद्धिहीन लोगों की स्वतंत्रता का समर्थन करता है जिसका परिणाम भंयकर हो सकता है। जे० एस० मिल भूल जाता है कि भाषण की अनियंत्रित स्वतंत्रता से अराजकता की वृद्धि हो सकती है, जो व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिए अहितकर है। पुन: जे० एस० मिल यह भी भूल जाता है कि सीमा पार कर तर्क, वितर्क, निर्बलता एवं अस्थिरता का परिचायक हो सकता है। जैसा कि बार्कर ने कहा है, 'Turn our duties into doubts.'

(ii) इसके अतिरिक्त मिल ने कहा है कि भाषण की स्वतंत्रता से सत्य की खोज हो सकती है परन्तु इसे पूर्ण सत्य नहीं माना जा सकता है। मिल यह भूल जाता है कि केवल वाद-विवाद के द्वारा ही नहीं, अपितु चिंतन के द्वारा भी सत्य की खोज की जा सकती है। गौतम बुद्ध, महात्मा गाँधी, ईसा मसीह आदि चिंतकों ने चिंतन एवं आत्मानुभूति के द्वारा ही सत्य की प्राप्ति की।

(iii) मिल का यह कहना गलत है कि किसी प्रकार के बंधन का न होना ही स्वतंत्रता की परिभाषा है। इस संदर्भ में टी० एच० ग्रीन का यह कथन सम्योचित प्रतीत होता है कि

"बंधनों का अभाव उसी प्रकार स्वतंत्रता नहीं है जिस प्रकार कुरूपता का अभाव सौन्दर्य नहीं है"। आज के औद्योगिक युग मे कानून परम् आवश्यक है। परन्तु जे० एस० मिल वर्तमान औद्योगिक युग की कल्पना करने में पूर्णतः असफल रहा। अतएव बंधनों के अभाव के रूप में स्वतंत्रता को परिभाषित करना निषेधात्मक प्रतीत होता है।

(iv) जे० एस० मिल के सिद्धांत की एक मूलभूत कमजोरी यह भी है कि उसने स्वतंत्रता एवं उत्तरदायित्व के संबंधों की विवेचना नहीं की है। उसने सामाजिक एवं कानूनी अधिकारों एवं दायित्वों के साथ व्यक्तिक स्वतंत्रता के सबंधों की पूरी अवहेलना की है। परिणामस्वरूप बार्कर ने ठीक ही लिखा है कि "मिल खोखली स्वतंत्रता एवं अमूर्त व्यक्ति का ही प्रवक्ता है"। (Mill was prophet of empty liberty and an Abstract individual.")

(v) जे० एस० मिल के स्वतंत्रता के सिद्धांत की एक कमजोरी यह भी है कि उसने समानता को कोई महत्व नहीं दिया है। उसने स्वतंत्रता को अपने आप में पूर्ण माना है। लेकिन मानव कल्याण के लिए केवल स्वतंत्रता ही पर्याप्त नहीं होती। स्वतंत्रता की सार्थकता के लिए समानता की आवश्यकता पड़ती है। समानता के अभाव में स्वतंत्रता केवल मृगतृष्णा है। समानता न होने पर कुछ मुट्ठी भर लोग ही स्वतंत्रता का उपयोग कर पाते हैं और उन मुट्ठी भर लोगों मे, अधिकांश लोग परतंत्रता स्वीकार लेते हैं। **डॉ० सी० एन० बेवर** ने ठीक ही लिखा है कि, "स्वतंत्रता समानता से बड़ी हो सकती है परन्तु स्वयं स्वतंत्रता भी समानता के अभाव में अधिक दिनों तक टिक नहीं सकती"।

अंत में यह भी कहा जा सकता है कि जे० एस० मिल ने व्यक्तिगत एवं सामाजिक कार्यों में जो विभेद किया है, यह अंतर सिद्धांत एवं व्यवहार मे सही नहीं है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसका कोई भी कार्य ऐसा नहीं होता, जिसपर समाज का प्रभाव न पड़ता हो और जो समाज पर प्रभाव न डालता हो। यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता कि कौन से कार्य ऐसे हैं, जिनका संबंध केवल अपने से और किसी से। कार्य ऐसे हैं जिनका संबंध दूसरे से हैं। अतः **बार्कर** ने लिखा है, "जे० एस० मिल अविभाज्य को विभाज्य करता है"। (Mill divides the indivisible.) इन सैद्धांतिक आपत्तियों के विरुद्ध कुछ व्यावहारीक त्रुटियाँ भी दिखाई पड़ती हैं यह निर्णय करने का अधिकार किसे होगा कि कौन कार्य व्यावहारीक है और कौन कार्य सामाजिक ? क्या यह निर्णय व्यक्ति करेगा या समाज ? यदि व्यक्तियों के इस निर्णय मे मतांतर होगा तो किसका मत निश्चित रूप से निर्णायक मत होगा ? जे० एस० मिल इन सब प्रश्नों पर मौन ही रहता है। इस प्रकार वास्तविकता के धरातल पर जे० एस० मिल का आत्म संबंध एवं अन्य संबंध कार्यों का विभाजन पूर्ण रूप से अनिश्चित एवं अव्यावाहारीक प्रतीत होता है।

निष्कर्ष—यद्यपि स्वततंत्रता पर मिल के विचार दोष युक्त है फिर भी वे सशक्त एवं उपयोगी हैं। जे० एस० मिल का यह कथन सत्य है कि "मानव-सुख, कल्याण एवं प्रगति के लिए स्वतंत्रता की महती आवश्यकता है"। स्वतंत्रता के वातावरण में ही मनुष्य का मानसिक स्तर ऊँचा उठ सकता है और उसकी मानसिक चेतना जागृत हो सकती है। आज के युग में जहाँ राज्य सर्वाधिकारवादी है, जहाँ राज्य बड़े पैमाने पर कार्यों का संपादन करता है, जहाँ व्यक्तियों को यंत्र के समान ही शुष्क एवं निरस समझा जाता है, जे० एस० मिल की स्वतंत्रता की पुकार मानव व्यक्तित्व की रक्षा के लिए एक अमोघ अस्त्र प्रतीत होती है।